अध्याय 5

भीतर से नहेम्याह के लिए समस्याएँ

पिछले अध्याय में नहेम्याह ने यहूदा के शत्रुओं के द्वारा उत्पन्न की गई समस्याओं के साथ व्यवहार किया। इस अध्याय में उसने यहूदियों के वर्गों के मध्य की एक समस्या का सामना किया। दुष्टता और लालची चलन को समाप्त करने के लिए नहेम्याह ने बलपूर्वक कार्य किया।

इस सम्पूर्ण अध्याय को प्रारम्भिक भाग के रूप में देखा गया है; कुछ लोग ऐसा सोचते हैं कि नहेम्याह एक ऐसी घटना की ओर संकेत कर रहा था जो शहरपनाह के पुनः निर्माण के कुछ समय बाद घटित हुई थी। निश्चित रूप से, इतना समय नहीं रहा होगा कि इस अध्याय में बताई गई सब बुरी बातें शहरपनाह के निर्माण किए जाने के समय स्थान लें। फिर भी, यह सम्भव है कि इस अवसर पर नहेम्याह के पास लायी गई शिकायतें कुछ ऐसी बात की ओर संकेत दे रही थीं जो नहेम्याह के पहुँचने से बहुत समय पहले आरम्भ हो चुकी थीं और बिना वेतन के शहरपनाह पर काम करने वाले पुरुषों के परिवारों पर आने वाले अतिरिक्त भार के कारण इतने ऊँचे शिखर पर पहुँच गई थीं।

एक समस्या: कर्ज़दारों के साथ दुर्व्यवहार किया जा रहा है (5:1-5)

[1]तब लोग और उनकी स्त्रियों की ओर से उनके भाई यहूदियों के विरुद्ध बड़ी चिल्लाहट मची। [2]कुछ तो कहते थे, "हम अपने बेटे-बेटियों समेत बहुत प्राणी हैं, इसलिये हमें अन्न मिलना चाहिये कि उसे खाकर जीवित रहें।" [3]कुछ कहते थे, "हम अपने अपने खेतों, दाख की बारियों और घरों को महँगी के कारण बन्धक रखते हैं कि हमें अन्न मिले।" [4]फिर कुछ यह कहते थे, "हम ने राजा के कर के लिये अपने अपने खेतों और दाख की बारियों पर रुपया उधार लिया। [5]परन्तु हमारा और हमारे भाइयों का शरीर और हमारे और उनके बच्चे एक ही समान हैं, तौभी हम अपने बेटे-बेटियों को दास बनाते हैं; वरन् हमारी कोई कोई बेटी दासी भी हो चुकी है; और हमारा कुछ बस नहीं चलता, क्योंकि हमारे खेत और

दाख की बारियाँ दूसरों के हाथ पड़ी हैं।"

धनवान लोग दरिद्र लोगों को ऊँची ब्याज दर पर धन उधार देने के द्वारा लाभ कमा रहे थे। वे लोग उधार लेने वालों की सम्पत्ति पर स्वामित्व ले रहे थे और जब वे ऋण नहीं चुका पाए तब उनके बच्चों पर भी स्वामित्व ले रहे थे।

आयत 1. आरम्भिक आयतें यह कहते हुए शीर्षक का परिचय देती हैं कि अनेक पुरुष और **उनकी स्त्रियों** की ओर से बड़ी शिकायत की जा रही थी और वे चिल्ला रहे थे। ऐसा सम्भव है कि इन "स्त्रियों" का वर्णन किया जाना महत्वपूर्ण हो। हो सकता है कि उस समुदाय की स्त्रियाँ अपने पतियों की तुलना में आर्थिक समस्याओं के बारे में अधिक जानकारी रखती थीं और चिन्तित थीं। हो सकता है कि पुरुष शहरपनाह के निर्माण में इतने व्यस्त हों कि उन्होंने अपने घराने के आर्थिक प्रबन्धों के बारे में सोचा भी नहीं हो। लोगों की पीड़ा उनके शत्रुओं (जैसे सम्बल्लत और उसके साथियों) के कारण उत्पन्न नहीं हुई थी परन्तु **उनके भाई यहूदियों के** कारण थी।

आयत 2. लोगों के तीन समूह नहेम्याह के पास शिकायतें लेकर आए। पहला, लोग मात्र यह कहने के लिए आए (जैसा पाठ्य बताता है) कि उनके बड़े परिवारों के कारण उन्हें **अन्न मिलना चाहिये** जिससे वे निरन्तर जीवित रह सकें। इस सन्दर्भ में बोलने वाले लोगों के बारे में ऐसा सोचा गया है कि वह भूमिहीन वर्ग, दैनिक मज़दूरी करने वाले लोग रहे होंगे जिनके पास बन्धक रखने के लिए भूमि नहीं थी परन्तु उनके पास अनेक लोग थे जिनका पालन पोषण किया जाना था। उनकी आवश्यकताओं ने उन्हें विवश किया कि वे धनवान लोगों से धन अथवा अन्न उधार लें और अब अपने ऋण चुकाने में उन्हें समस्या आ रही थी।

आयत 3. दूसरे समूह ने कहा कि अपनी आवश्यकता के अनुसार **अन्न** खरीदने के लिए वे अपनी सम्पत्ति को **बन्धक** रख रहे थे। वे धनवान लोगों से धन उधार ले रहे थे और वे अपनी सम्पत्ति - अर्थात अपने **खेतों**, अपनी **दाख की बारियों और** अपने **घरों** - का प्रयोग ऋण के लिए प्रमाणक अथवा ज़मानत के रूप में कर रहे थे। अगर वे ऋणों को ठहराए हुए समय में नहीं चुकाते हैं जैसा उन्होंने सहमति पत्र पर हस्ताक्षर किए थे तो उनके देनदार उनकी बन्धक सम्पत्ति के स्वामी बन जाएँगे।

उन्हें ऋण की आवश्यकता क्यों पड़ी? उस भूमि में आई **महँगी** ने उन्हें आर्थिक सहायता प्राप्त करने के लिए उग्र बना दिया। यह एकमात्र समय है जब पुस्तक में "महँगी" शब्द का रिकॉर्ड रखा गया है। यह सच है कि यरूशलेम के पुनः निर्माण के बारे में आरम्भ के पदों में महँगी के बारे में बताया नहीं गया परन्तु यह ऐसा सिद्ध नहीं करता कि यहाँ पर बताई गई घटनाएँ शहरपनाह के पुनः निर्माण के बाद घटित हुईं।

आयत 4. सामान्य लोगों के तीसरे समूह ने गरीब होने का अन्य कारण बताया। उन्हें **राजा के कर के लिये** - अर्थात वह कर जिस पर फ़ारस के राजा का स्वामित्व था (एज्रा 4:13) - **रुपया** उधार लेने और अपने **खेतों** और **दाख की**

बारियों को बन्धक रखने के लिए विवश होना पड़ा।

आयत 5. जैसा कि निवेदनकर्ता उन लोगों के साथ निकटता से जुड़े हुए थे जिनसे उन्होंने रुपया उधार लिया था (**"हमारा और हमारे भाइयों का शरीर और हमारे और उनके बच्चे एक ही समान हैं"**) इसलिए उनके **बच्चे** और उधार देनेवालों के **बच्चे** एक ही समान थे। NIV कहती है, "हम अपने देश के लोगों के समान एक ही माँस और लहू से हैं ... हमारे बेटे उनके बेटों के समान ही अच्छे हैं।" हालांकि यह सच था फिर भी अपने ऋण चुकाने के लिए लेनदारों के लिए आवश्यक था कि वे अपने **बेटे-बेटियों** को **दास** के रूप में बेच दें। वास्तव में उनकी **कोई कोई बेटी दासी भी हो चुकी** थीं।

"दासी भी हो चुकी," के स्थान पर अन्य एड. कहते हैं कि उनकी कोई कोई बेटी "अपहरण" (NRSV) का शिकार हो चुकी थी अथवा उनके साथ "बलात्कार" (CEV) किया जा चुका था। यह כְּבַשׁ (*कबाश*)[1] का एक सम्भावित अर्थ है फिर भी यह शब्द आरम्भ में आयत 5 में **दास बनाते हैं** के अर्थ में देखने को मिलता है। ऊपरी तौर पर, बच्चों को बेचा जाना कुछ समय पूर्व ही आरम्भ हुआ था और सबसे पहले बेटियों को ले जाया जाता था (देखें NJB; NCV; NLT)। हालांकि इस सन्दर्भ में *कबाश* का सम्भावित रूप से अर्थ "बलात्कार" नहीं है फिर भी यह विचार इससे अधिक दूर का भी नहीं है। जब कोई बेटी दासी के रूप में बेच दी जाती थी तब प्रायः वह अपने स्वामी की रखैल बना दी जाती थी।

अपनी सम्पत्ति खो देने के बाद दरिद्र लोग, तुरन्त प्रभाव में, उतावले देनदारों को ऋण चुकाने के लिए अपने बच्चे बेच रहे थे। उन्होंने नहेम्याह से शिकायत की कि उनका **कुछ बस नहीं चलता** क्योंकि एक समय में जो **खेत और दाख की बारियाँ** उनकी थीं वे अब **दूसरों के हाथ पड़ी हैं**।

इन आयतों में दिखाई देने वाले आर्थिक अभ्यासों को मूसा की व्यवस्था की शिक्षाओं के प्रकाश में किस प्रकार देखा जाना चाहिए? व्यवस्था ने रुपया उधार देने से मना नहीं किया परन्तु साथी इस्राएली को ऋण ब्याज पर देने के लिए यह मना करती है। परमेश्वर ने मूसा के द्वारा कहा था,

> अपने किसी भाई को ब्याज पर ऋण न देना, चाहे रुपया हो, चाहे भोजनवस्तु हो, चाहे कोई वस्तु हो जो ब्याज पर दी जाती है, उसे ब्याज पर न देना। तू परदेशी को ब्याज पर ऋण तो दे, परन्तु अपने किसी भाई से ऐसा न करना, ताकि जिस देश का अधिकारी होने को तू जा रहा है, वहाँ जिस जिस काम में अपना हाथ लगाए उन सभों में तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे आशीष दे (व्यव. 23:19, 20; देखें निर्गमन 22:25; लैव्य. 25:35-37)।

यहूदियों से यह माँग की गई कि वे "रुपये का सौवाँ भाग" (5:11) अर्थात जो ब्याज उन्होंने लगाया था वह लौटा दें। इन देनदारों ने अवैध रूप से उनके ऋण पर ब्याज लगा दिया था।

हालांकि व्यवस्था ने यह स्वीकृति दी कि "बन्धक की वस्तुओं" को ऋण पर ज़मानत के रूप में दी जाए (व्यव. 24:10, 11) ठीक उसी समय व्यवस्था की

आत्मा ने यह भी बताया कि जिसने रुपया उधार दिया वह उधार लेने वाले को ऐसी किसी वस्तु से वंचित नहीं रखे जो उसकी जीविका के लिए आवश्यक हो। व्यवस्था ने एक व्यक्ति को यहाँ तक स्वीकृति दी कि अपना ऋण चुकाने के लिए वह स्वयं को उस व्यक्ति के हाथ बेच दे जो उसके रुपये पर स्वामित्व रखता था (लैव्य. 25:39, 40; देखें निर्गमन 21:1-6; व्यव. 15:12-18) परन्तु यह चलन दो तरीकों से हल्का किया गया:

1. एक पुरुष दास के रूप में "छह वर्षों" से अधिक काम नहीं कर सकता था अथवा "जुबली के वर्ष" तक ही काम कर सकता था (जो प्रत्येक पचासवें वर्ष में आता था); तब उसे स्वतन्त्र करना आवश्यक था। व्यवस्था ने इस बात की स्वीकृति नहीं दी कि दास बना हुआ एक इस्राएली, गैर इस्राएली के हाथ बेच दिया जाए क्योंकि एक अन्यजाति व्यक्ति के पास जुबली के वर्ष का आदर करने का कोई कारण नहीं था। अतः, व्यवस्था ने दासों की नीलामी में किसी इब्रानी दास को बेचने से मना कर दिया (लैव्य. 25:42)। वे परदेशी जो इस्राएलियों के द्वारा दास बनाए गए उनके साथ अलग प्रकार से व्यवहार किया जा सकता था परन्तु सब दासों के साथ मानवता का व्यवहार करना आवश्यक था (लैव्य. 25:44-46)।

2. जिस समय एक यहूदी, दास के रूप में काम करता था तब आवश्यक था कि उसे एक वास्तविक दास के रूप में नहीं परन्तु मज़दूर के रूप में देखा जाए। उसके साथ "कठोरता से" (लैव्य. 25:43, 46, 53) व्यवहार नहीं किया जाना था। व्यवस्था ने ऋण चुकाने के लिए बच्चों को बेच देने के विचार की बिल्कुल भी स्वीकृति नहीं दी (जबकि नहेम्याह के समय में ऐसा हुआ)।[2]

व्यवस्था के अनुसार, इस्राएली समुदाय के प्रत्येक सदस्य के लिए एक आदर्श आर्थिक स्थिति थी कि अन्य सब सदस्यों के साथ इस प्रकार व्यवहार किया जाए जैसे वे सब एक बड़े परिवार के सदस्य हों। एक धर्मी परिवार में कोई भी व्यक्ति किसी अन्य के मूल्य पर लाभ कमाना नहीं चाहता। हो सकता है कि प्रत्येक व्यक्ति परिवार के अधिकारों में समानता से भाग नहीं रखते हों फिर भी उसके सदस्य आवश्यकतानुसार एक दूसरे की सहायता करने की इच्छा रखते हैं। अगर इसमें रुपया उधार देने की बात हो तो उधार देने वाला हर्ष के साथ ऋण उपलब्ध करवाएगा और उधार लेने वाला उसे चुकाने के लिए अपनी ओर से उत्तम प्रयास करेगा। अगर वह ऐसा नहीं कर सकता तो वह उस ऋण को चुकाने के लिए अपने भाई के यहाँ काम करने के लिए सहमत होगा। ये समझौते सही और निष्पक्ष थे; परन्तु उस पर ब्याज निर्धारित करना, दूसरे की सम्पत्ति पर अधिकार कर लेना अथवा देनदार के साथ कठोर व्यवहार भाईचारे के बन्धन को तोड़ते थे।

नहेम्याह के दिनों में जो हुआ उसने अनेक तरीकों से व्यवस्था को तोड़ा। उधार देने वाले ऋण पर ब्याज लगा रहे थे। उधार लेने वाले से वे उनका वह सब कुछ ले रहे थे जो उनकी जीविका के लिए आवश्यक था और उसे अपने पास ही रखे हुए थे। जब उधार लेने वाले ऋण नहीं चुका पाए तो देनदार उन्हें और उनके बच्चों को दास बना रहे थे। कुछ मामलों में देनदार इधर उधर घूम कर इन दासों को अन्यजाति लोगों को बेच रहे थे (5:8)।[3] अन्य शब्दों में, धनवान यहूदी अपने दरिद्र

भाइयों के साथ दुर्व्यवहार कर रहे थे और ऋण के विषय में परमेश्वर के नियम तोड़ रहे थे।

एक उपाय: अभ्यासों को बदलना, अनुचित रूप से प्राप्त लाभों को पुनः स्थापित करना (5:6-13)

[6]यह चिल्लाहट और ये बातें सुनकर मैं बहुत क्रोधित हुआ। [7]तब अपने मन में सोच विचार करके मैं ने रईसों और हाकिमों को घुड़ककर कहा, "तुम अपने अपने भाई से ब्याज लेते हो।" तब मैं ने उनके विरुद्ध एक बड़ी सभा की; [8]और मैं ने उनसे कहा, "हम लोगों ने तो अपनी शक्ति भर अपने यहूदी भाइयों को जो अन्यजातियों के हाथ बिक गए थे, दाम देकर छुड़ाया है, फिर क्या तुम अपने भाइयों को बेचोगे? क्या वे हमारे हाथ बिकेंगे?" तब वे चुप रहे और कुछ न कह सके। [9]फिर मैं कहता गया, "जो काम तुम करते हो वह अच्छा नहीं है; क्या तुम को इस कारण हमारे परमेश्वर का भय मानकर चलना न चाहिये कि हमारे शत्रु जो अन्यजाति हैं, वे हमारी नामधराई न करें? [10]मैं भी और मेरे भाई और सेवक उनको रुपया और अनाज उधार देते हैं, परन्तु हम इसका ब्याज छोड़ दें। [11]आज ही उनको उनके खेत, और दाख, और जैतून की बारियाँ, और घर फेर दो; और जो रुपया, अन्न, नया दाखमधु, और टटका तेल तुम उनसे ले लेते हो, उसका सौवाँ भाग फेर दो?" [12]उन्होंने कहा, "हम उन्हें फेर देंगे, और उनसे कुछ न लेंगे; जैसा तू कहता है, वैसा ही हम करेंगे।" तब मैं ने याजकों को बुलाकर उन लोगों को यह शपथ खिलाई कि वे इसी वचन के अनुसार करेंगे। [13]फिर मैं ने अपने कपड़े की छोर झाड़कर कहा, "इसी रीति से जो कोई इस वचन को पूरा न करे, उसको परमेश्वर झाड़कर, उसका घर और कमाई उससे छुड़ाए, और इसी रीति से वह झाड़ा जाए, और छूछा हो जाए।" तब सारी सभा ने कहा, "आमीन!" और यहोवा की स्तुति की। तब लोगों ने इस वचन के अनुसार काम किया।

आयत 6. जब नहेम्याह ने यह समाचार सुना कि उसके कुछ भाई अन्य लोगों से अवैध रूप से लाभ ले रहे हैं तो उसकी तुरन्त की प्रतिक्रिया में उसने क्रोध किया। वास्तव में वह **बहुत क्रोधित हुआ**। नहेम्याह परमेश्वर और व्यवस्था से प्रेम करता था और वह यह देखकर क्रोधित हुआ कि परमेश्वर के लोगों के द्वारा व्यवस्था तोड़ी गई। फिर, नहेम्याह अपने साथी यहूदियों से प्रेम करता था और धनवानों के द्वारा दरिद्र लोगों पर अत्याचार को देखकर वह क्रोधित हुआ।

आयत 7. एक प्रभावी अगुवे के रूप में, नहेम्याह ने इस समस्या तक पहुँच बनाई और एक समय में एक कदम उठाते हुए इसका समाधान किया।

नहेम्याह ने समस्या का विश्लेषण किया। उसने क्रोध का अनुभव किया परन्तु उस भाव के आधार पर तुरन्त कदम नहीं उठाया। इसके स्थान पर, वह कहता है कि उसने, **तब अपने मन में सोच विचार** किया। NIV कहती है, "मैंने अपने मन

में [इन दोषों] पर चिन्तन किया।" नहेम्याह एक जोशीला व्यक्ति था - परन्तु वह चाहे कितना ही क्रोधित क्यों न हो जाए परन्तु फिर भी बिना सोचे समझे कदम उठाने वाला व्यक्ति नहीं था।

नहेम्याह का अगला कदम लोगों का सामना करना था। उसने दोषी लोगों का सामना व्यक्तिगत रूप से किया। उसने **रईसों और हाकिमों को घुड़ककर**, फटकार लगाई कि वे अपने यहूदी **भाई**[यों] **से ब्याज लेते** हैं। "घुड़कना," इब्रानी शब्द רִיב *(रिब)* के एक रूप का अनुवाद करता है जो प्रायः कानूनी शब्द के रूप में प्रयोग में लिया जाता है। ESV ने यह कहते हुए इसे यहाँ पर इस प्रकार लिया है कि उसने उनके "विरुद्ध दोष प्रस्तुत किए।" स्पष्टता के साथ, इस विवाद में दोषी दल उच्च वर्ग अर्थात यहूदा के धनवान लोग थे।

NASB में "ब्याज लेने" के लिए अनुवादित शब्द के अर्थ पर भी प्रश्न किया गया है। इसी प्रकार यहाँ पर और 5:10 में काम में लिया गया इब्रानी शब्द מַשָּׁא *(मशशा')*, "ब्याज" (נֶשֶׁךְ, *नेशेक*, जैसा व्यवस्थाविवरण 23:19 में है) के लिए कोई सामान्य शब्द नहीं है। डेरेक किड्नर ने "उधार देना" अथवा "ऋण" के अर्थ में इसे समझाया[4] जबकि एड्विन एम. यमौची ने कहा कि इसका अर्थ है "ऋण चुकाने के लिए एक बोझ अथवा दावा लागू करना।"[5] लेस्ली सी. एल्लन का मानना था कि इब्रानी क्रिया का मूल अर्थ बन्धक की वस्तुओं के विरुद्ध ऋण देना था।[6] अनुवादों भी भिन्नता देखने को मिलती है: "तुम अपने साथी यहूदियों पर ऋण के लिए बन्धक की वस्तुओं के रूप में अधिकार रखते हो" (REB); "तुममें से प्रत्येक व्यक्ति अपने भाई पर एक बोझ लाद रहे हो" (NJB)। ऐसा लगता है कि अत्यधिक उपयुक्त रूप से यह शब्द "ब्याज लेने" की ओर संकेत दे रहा है जैसा NRSV अनुवाद करती है। यह दो कारणों से सही है: (1) बन्धक की वस्तु लेने (हालांकि इसे स्थायी रूप से नहीं रखा जाना था) के लिए व्यवस्था के द्वारा स्वीकृति दी गई थी और (2) 1 प्रतिशत पुनः लौटाने का सन्दर्भ (5:11) सही प्रकार से तब ही समझ में आता है जब यह ब्याज लौटाने की ओर संकेत करता हो जो रईसों ने लिया था। यह सन्देहपूर्ण है कि "ब्याज लेना" (NASB; KJV) उस शब्द के लिए अच्छा अनुवाद है जो इस आयत में पाया गया है। प्राचीन शब्द, "ब्याज लेना," ऋण पर - अवैध रूप से उच्चता के साथ - अत्यधिक ब्याज लगाना है।[7]

नहेम्याह ने आरम्भ में दोषी दलों से व्यक्तिगत रूप से बात की परन्तु उसने ऊपरी तौर पर इच्छित परिणाम प्राप्त नहीं किए। तब बाद में वह जनसाधारण के द्वारा समझाए जाने के लिए बढ़ा। अगला चरण लेने में नहेम्याह ने एक सार्वजनिक **सभा** बुलाई। इस व्यवस्था में उसने उचित निवेदन किया जिससे दोषियों को हिलाया जाए कि वे अपने व्यवहार में परिवर्तन लाएँ। इस प्रकार की सभा में उसने सबको सिखाया कि इस परिस्थिति में परमेश्वर क्या चाहता है और वह साथी लोगों के दबाव का प्रयोग कर पाया जिससे गलती करने वाले लोगों को उत्साहित किया जा सके कि वे अपने तरीकों में परिवर्तन लाएँ।

आयत 8. नहेम्याह ने अनेक तर्कों का प्रयोग किया जिससे दोषी लोगों को पश्चात्ताप तक लाने के लिए कायल किया जा सके। उसने सूचित किया कि देनदारों

के लिए यह अनुचित है कि वे (अपने) **भाइयों** [साथी यहूदियों] **को अन्यजातियों के हाथ बेच** दें। यह पद संकेत देता है कि उसने और अन्य लोगों ने उन यहूदियों को **छुड़ाया** अथवा वापस लेकर आए और सम्भवतः उन्हें स्वतन्त्र किया जो अन्यजातियों के हाथ **बिक** गए थे। अब ये "रईस" और "हाकिम" (5:7) दरिद्र यहूदियों को दासों के बाज़ार में बेच रहे थे जो एक ऐसा अभ्यास था जो प्रकट रूप से व्यवस्था के द्वारा प्रतिबन्धित था (लैव्य. 25:42)।

नहेम्याह और उसके मित्रों के द्वारा यहूदी दासों को छुड़ाना अथवा ख़रीद कर वापस लाने का सन्दर्भ सम्भावित रूप से एक अतिरिक्त अर्थ रखता होगा। यह इस मनसा के साथ रखा गया होगा कि यहूदियों को याद दिलाया जा सके कि वे उनके दबाने वालों से दो बार छुड़ाए गए हैं: उस समय जब वे मिस्र से बाहर निकाले गए और जब वे बेबीलोन की दासता से मुक्त किए गए। शायद सुनने वाले लोगों को स्वयं से पूछना चाहिए, "क्या यह हमारे लिए उचित है, जो अन्यजातियों के हाथों से छुड़ाए गए, कि अपने भाइयों को फिर से अन्यजातियों के हाथों दासत्व में बेच दें?"

इस पाठ्य को देखकर ऐसा लगता है जैसे इस अपराध के दोषी लोग सभा के सम्मुख बैठे हों जिनसे नहेम्याह बात कर रहा हो। शायद वह इस बिन्दु पर थोड़ी देर के लिए रुका होगा और उन्हें एक अवसर दिया होगा कि उसके दोष का उत्तर दिया जाए परन्तु उनके पास कोई उत्तर अथवा बहाना नहीं था। **वे चुप रहे और कुछ न कह सके।**

आयत 9. साथ ही, नहेम्याह ने **परमेश्वर का भय** मानने के लिए निवेदन किया। यह भय ऐसा होना चाहिए था कि परमेश्वर के लोग अपने भाइयों के साथ दुर्व्यवहार करने से बचे रहें; यह ऐसा होना चाहिए था कि लोग व्यवस्था का आदर करें जो उन्हें उस प्रकार के चलन से रोके जिसमें वे शामिल हो रहे थे। परमेश्वर और अपने साथी यहूदियों के प्रति विश्वासयोग्यता उन्हें इस प्रकार रोकनी चाहिए थी कि **जो अन्यजाति हैं, वे** परमेश्वर के लोगों की **नामधराई न करें**। वे **शत्रु** जो शहरपनाह के पुनः निर्माण के कार्य को रोकने का प्रयास कर रहे थे उन्होंने अवश्य ही यहूदियों के आपस में एक दूसरे के साथ दुर्व्यवहार करने और आपस में लड़ने के कारण उन्हें ठट्ठों में उड़ाया होगा। उन्होंने उपयुक्त रूप से कहा होगा, "अगर वे एक दूसरे के साथ खड़े भी नहीं रह सकते तो उस शहरपनाह के पुनः निर्माण के लिए एक साथ काम करने की अपेक्षा कैसे कर सकते हैं?"

आयत 10. जब नहेम्याह ने देनदारों को मनाने का प्रयास किया कि वे वही करें जो सही है तब उसने स्वयं को और अपने सहयोगियों को एक आदर्श के रूप में प्रस्तुत किया कि उनके अनुसार वे भी करें। उसके जो **भाई और सेवक** थे उनका उसने वर्णन किया। उसके "भाई" शायद वे लोग थे जो शारीरिक रूप से उसके सम्बन्धी थे (देखें 1:2) और उसके "सेवक" उसके शासन प्रबन्ध में उसके अधीन अधिकारी रहे होंगे। उसने यह अर्थ प्रदान किया कि वे बिना ब्याज के उन लोगों को **रुपया और अनाज उधार दे** रहे **थे** जो ज़रूरतमन्द थे। अगर वे ऐसा कर सके तो अन्य लोग भी ऐसा कर सकते थे - और उन्हें ऐसा करना चाहिए।

परिवर्तन के लिए एक निवेदन ने दोषियों के विरुद्ध नहेम्याह के मामले को समाप्ति प्रदान की। **"परन्तु हम इसका ब्याज** [ब्याज लगाना] **छोड़ दें,"** ऐसा उसने कहा। कुछ टीकाकार ऐसा मानते हैं कि नहेम्याह इस बात का अंगीकार कर रहा था कि अन्य "रईसों" और "हाकिमों" के समान वह और उसके साथी उन्हीं बातों के दोषी थे। यह व्याख्या अनुपयुक्त लगती है; अगर नहेम्याह उसी समान कर रहा था तो शायद वह उनके व्यवहार पर "बहुत क्रोधित" नहीं होता (5:6)। फिर, उसके द्वारा प्रयुक्त प्रथम पुरुष ("परन्तु *हम* इसका ब्याज छोड़ दें"; बल दिया गया है) यह सिद्ध नहीं करता कि वह उन दोषों का अपराधी था जिनका वह वॉल्.न कर रहा था। इसके स्थान पर, उसने प्रथम पुरुष का प्रयोग अलंकार विद्या के रूप में किया; अपने श्रोताओं के साथ स्वयं की पहचान करने के द्वारा वह उन्हें और भी अच्छी प्रकार से इस बात के लिए राज़ी कर पाएगा कि वे उसके निवेदन को स्वीकार कर लें। एज्रा ने उसी समान तकनीक का प्रयोग अपने निवेदन में उन लोगों के साथ किया जिनके लिए आवश्यक था कि वे अपनी मूर्तिपूजक पत्नियों को निकाल दें (एज्रा 9:6)।[8] जिस समय नहेम्याह के शब्द, किए गए अपराध के विरुद्ध कठोर रहे ठीक उसी समय उसने अपना प्रस्तुतिकरण किसी प्रकार के वॉल्.न के स्थान पर एक निवेदन के साथ किया। उसका लक्ष्य राज़ी करने का था न कि निन्दा करने का।

आयत 11. जिन लोगों ने व्यवस्था को तोड़ा उन्हें अपने गलत चलन को छोड़ने के लिए बलपूर्वक आग्रह करने मात्र के स्थान पर नहेम्याह ने पुनः स्थापन के लिए एक योजना सुझाई। उसने कहा कि गलती करने वाले लोग वह सब लौटा दें जो उन्होंने लिया है। उसने उनसे बलपूर्वक आग्रह किया कि वे **उनको उनके खेत, और दाख, और जैतून की बारियाँ, और घर फेर** दें जो उन्होंने लिए हैं। फिर, उनके लिए आवश्यक था कि वे रुपये का **सौवाँ भाग फ़ेर** दें, जो उपयुक्त रूप से वह ब्याज था जो उन्होंने लगाया था - सम्भावित रूप से प्रति महीना 1 प्रतिशत। 12 प्रतिशत का वार्षिक प्रतिशत "इस अवधि में फ़ारस के लोगों के मध्य 20 प्रतिशत प्रति वर्ष से बहुत कम रहा होगा।"[9] उनके लिए यह भी आवश्यक था कि वे **अन्न, नया दाखमधु, और टटका तेल** भी फ़ेर दें जो वे **उनसे ले लेते** थे।

आयत 12. नहेम्याह के भाषण का परिणाम, निःसन्देह वैसा ही रहा जिसकी उसने आशा की। दोषी लोग इसके लिए राज़ी हो गए; उन्होंने कहा, **"जैसा तू कहता है, वैसा ही हम करेंगे।"** नहेम्याह का समझाने बुझाने का कौशल, राजा के साथ उसके साक्षात्कार में (2:1-8) और शहरपनाह के पुनः निर्माण के लिए लोगों को बुलावा देने के लिए उसके भाषण में जैसे देखने को मिलता है (2:17, 18), वैसा फिर से इस सन्दर्भ में स्पष्टता के साथ देखा जा सकता है।

नहेम्याह यह सुनिश्चित करना चाहता था कि जो लोग पुनः स्थापन के लिए सहमत हुए हैं वे अपने **वचन** (דָּבָר, *डाबर*, अक्षरशः, "शब्द") में बने रहेंगे। उसने उनके लिए व्यवस्था की जिससे वे **याजकों** और सम्पूर्ण मण्डली के सम्मुख जनसाधारण में **शपथ** लें अथवा मन्नत मानें। याजक, परमेश्वर का प्रतिनिधित्व करते थे; उनकी उपस्थिति इस मनसा से रखी गई कि जो लोग शपथ ले रहे थे उन

पर यह प्रभाव रहे कि वे ऐसा प्रभु के सम्मुख कर रहे हैं (देखें गिनती 5:19)।

आयत 13. यह समझाने के लिए कि अगर वे अपनी शपथ पूरी करने में असफल हो जाते हैं तो उनके साथ क्या होगा इसके लिए नहेम्याह ने उनके सम्मुख (अपने) **कपड़े की छोर झाड़** दी। इब्रानी पाठ्य कहता है कि उसने अपनी "छाती" (חֵ֫ק, *खोट्सेन*) अथवा "[अपने] कपड़े की छाती" (NJPSV) को झाड़ा। अन्य अनुवाद इस प्रकार हैं "[अपने] कपड़े की छोर" (NRSV)।[10] अनेक लेखक दावा करते हैं कि "छोर" एक कमरबन्द की ओर संकेत देता है जिसे कमर पर बाँधा जाता है जिससे बागे को इसके स्थान में थामा रखा जा सके। व्यक्तिगत चीज़ों का वहन करने के लिए भी कमरबन्द काम आता था। जब इसे झाड़ा जाता था तो वे चीज़ें भी बाहर गिर जाती होंगी। अपने कपड़े को झाड़ने के बाद नहेम्याह ने उनसे कहा, **"इसी रीति से जो कोई इस वचन को पूरा न करे, उसको परमेश्वर झाड़कर, उसका घर और कमाई उससे छुड़ाए।"** उसने यह कहते हुए समाप्त किया, **"इसी रीति से वह झाड़ा जाए, और छूछा हो जाए।"**

परमेश्वर के सम्मुख शपथ लेने में सदैव स्वयं पर शाप कहने का विचार शामिल होता था। जो कोई इस प्रकार किसी शपथ को मानने में असफल हो जाता था वह शापित हो जाता था। जो लोग उस समय उस **सभा** में थे उन्होंने जो सुना और देखा उसका प्रत्युत्तर उन्होंने स्वीकृति के एक ऊँचे शोर के साथ दिया। उन सबने ऊँची आवाज़ के साथ, **"आमीन!"** कहा और **यहोवा की स्तुति की**। जब प्रभु अपने लोगों में अपना मार्ग पाता है तब इसका उपयुक्त प्रत्युत्तर सदैव स्तुति है।

5:1-5 में बताए गए पापों के लिए जो लोग दोषी थे, जो नहेम्याह के शब्दों के अनुसार मानने के लिए तैयार हो गए और जिन्होंने उसके दिशा निर्देशों के अनुसार चलने की स्वयं प्रतिज्ञा ली उन्होंने अपने शब्दों को आदर दिया: **लोगों ने इस वचन के अनुसार काम किया।** हालांकि पाठ्य विस्तार से नहीं बताता फिर भी यह माना जा सकता है कि जिन लोगों का शोषण किया गया उन्हें मुआवज़ा दिया गया, फिर से एकता पुनः स्थापित की गई और यरूशलेम की शहरपनाह का कार्य फिर से आरम्भ कर दिया गया अथवा निरन्तर जारी रखा गया।

एक उदाहरण: परमेश्वर के नियम के अनुसार चलना (5:14-19)

[14]फिर जब से मैं यहूदा देश में उनका अधिपति ठहराया गया, अर्थात् राजा अर्तक्षत्र के बीसवें वर्ष से ले उसके बत्तीसवें वर्ष तक, बारह वर्ष, मैं और मेरे भाइयों ने अधिपति के हक़ का भोजन नहीं खाया। [15]परन्तु पिछले अधिपति जो मुझ से पहले थे, वे प्रजा पर भार डालते थे, और उनसे रोटी, और दाखमधु, और इसके साथ चालीस शेकेल चाँदी लेते थे, वरन् उनके सेवक भी प्रजा के ऊपर अधिकार जताते थे; परन्तु मैं ऐसा नहीं करता था, क्योंकि मैं यहोवा का भय मानता था। [16]फिर मैं शहरपनाह के काम में लिपटा रहा, और हम लोगों ने कुछ भूमि मोल न ली; और मेरे सब सेवक काम करने के लिये वहाँ इकट्ठे रहते थे। [17]फिर मेरी मेज पर खानेवाले एक सौ पचास यहूदी और हाकिम और वे भी थे,

जो चारों ओर की अन्यजातियों में से हमारे पास आए थे। 18जो प्रतिदिन के लिये तैयार किया जाता था वह एक बैल, छः अच्छी अच्छी भेड़ें या बकरियाँ थीं, और मेरे लिये चिड़ियें भी तैयार की जाती थीं; दस दस दिन के बाद भाँति भाँति का बहुत दाखमधु भी तैयार किया जाता था; तौभी मैं ने अधिपति के हक़ का भोज नहीं लिया, क्योंकि काम का भार प्रजा पर भारी था। 19हे मेरे परमेश्वर! जो कुछ मैं ने इस प्रजा के लिये किया है, उसे तू मेरे हित के लिये स्मरण रख।

5:14-19 में नहेम्याह के शब्द उस अवसर पर नहीं बोले गए जैसा अध्याय के आरम्भ में वर्णन किया गया है; इसके स्थान पर, वे उन लोगों के लाभ के लिए लिखे गए जो यरूशलेम की शहरपनाह के पुनः निर्माण के ऐतिहासिक रिकॉर्ड को पढ़ने जा रहे थे। ये अन्तिम कथन, जो रिकॉर्ड में[11] इस बिन्दु पर एक प्रकार के उपवाक्य के रूप में डाले गए, यहूदा के अधिपति के रूप में नहेम्याह की निष्ठा के बचाव के साथ हैं।

आयत 14. नहेम्याह के स्वयं के कदमों का बचाव इस कथन से आरम्भ होता है और समाप्त होता है (5:14, 18)[12] कि न तो उसने और न ही उसके **भाइयों** ने **हक़ का भोजन** स्वीकार किया जो **यहूदा** के **अधिपति** के लिए फ़ारस के प्रशासन के द्वारा सम्पूर्ण **बारह वर्ष** तक उपलब्ध करवाया गया जब तक उसने उस अधिकार के अन्तर्गत कार्य किया। (**राजा अर्तक्षत्र के बीसवें वर्ष से ले उसके बत्तीसवें वर्ष तक** 445 से 433 ई.पू. रहा होगा) ऊपरी तौर पर, उस प्रान्त के अधिपति को एक निश्चित भाग उन करों में से आवंटित किया गया जो फ़ारस के राजा के लिए जीविका के भत्ते के रूप में एकत्रित किया जाता था। नहेम्याह ने कहा कि उसने कभी भी वह भत्ता नहीं लिया। 5:18 में उसने अपने कार्यालय के लाभों को अस्वीकार करने का अपना कारण बताया: "क्योंकि काम का भार प्रजा पर भारी था।" अन्य शब्दों में लोगों पर कर का भार इतना अधिक था कि नहेम्याह ने उनसे वह भाग भी लेने से मना कर दिया जिसका वह अधिकारी था। सामान्यतः "अधिपति का हक़ का भोजन" उन करों से आता था जिन पर वह राज्य करता था।

आयतें 15, 16. साथ ही, नहेम्याह ने दावा किया कि उससे **पिछले अधिपति** न केवल अपने भत्ते प्राप्त करते थे परन्तु **वे प्रजा पर भार डालते थे** परन्तु वह उनके समान नहीं था। इन अधिकारियों ने **उनसे रोटी, और दाखमधु** लिया और **चालीस शेकेल चाँदी** का एक कर भी लागू किया। **उनके सेवक** (उनके शासन प्रबन्ध में उनके अधीन अधिकारी) भी अपने अधिकारियों से स्वीकृति पाए हुए थे जिससे **प्रजा** के ऊपर अधिकार जताए। अत्यधिक उपयुक्त रूप से उसके मन में प्रान्त के, जरुब्बाबेल जैसे आरम्भिक अधिपति नहीं थे परन्तु आधुनिक अधिपति थे।

बीते समय में, कुछ विद्वानों ने इस बात से इनकार किया कि जरुब्बाबेल और नहेम्याह के बीच कोई अधिपति रहे; उन्होंने ऐसा विचार किया कि नहेम्याह, सम्बल्लत और उसके पूर्व अधिकारियों के बारे में बात कर रहा था जिन्होंने यहूदा के साथ साथ सामरिया पर भी राज्य किया। फिर भी, पुरातत्व साक्ष्य ने तीन पुरुषों के नाम प्रकाशित किए हैं जिन्होंने उस समय काल में यहूदा के अधिपतियों

के रूप में कार्य किया: एलनातान, येहोइज़र, और अहज़ै।[13]

जिस कारण से नहेम्याह ने अपने पूर्व अधिकारियों से हट कर कार्य करने के लिए स्वयं को दे दिया था उसका कारण यह था कि वह **यहोवा का भय मानता था**। परमेश्वर के प्रति भय और उसके लिए आदर के कारण जिन लोगों पर वह शासन करता था उनकी हानि करते हुए अपने पद का लाभ उठाने के लिए उसने मना कर दिया। उदाहरण के लिए उसने **कुछ भूमि मोल न ली**। अधिपति के रूप में अगर वह चाहता तो जितनी भूमि वह चाहता उतनी प्राप्त कर सकता था। इसके स्थान पर वह **शहरपनाह** के पुनः निर्माण **के काम में लिपटा रहा** (अक्षरशः, "लिपटा रहा"; AB) और उस **काम** में अपने **सब सेवक** (अपने शासन प्रबन्ध में अधीन अधिकारियों को या व्यक्तिगत सेवक) प्रयोग में लिए।

आयतें 17, 18. अपने कार्यालय से लाभ प्राप्त करने के स्थान पर, राजा से **हक़ का भोज** काम में नहीं लेते हुए, प्रत्येक जन के लिए आतिथ्य सत्कार दिखाते हुए, स्वयं के खर्चे पर **एक सौ पचास यहूदी और हाकिम** से भी अधिक लोगों को वह अपनी मेज से भोजन करवाता था। नहेम्याह ने लोगों से कुछ लिया नहीं परन्तु निरन्तर उन्हें दे रहा था। बड़ी संख्या में लोगों को खिलाने और आगन्तुकों के प्रति उदार आतिथ्य सत्कार का प्रयोग करते हुए (**जो चारों ओर की अन्यजातियों में से हमारे पास आए थे**) नहेम्याह ने प्राचीन समय के राजा की रीति का पालन किया। सुलैमान ने भी बड़ी संख्या में लोगों को अपनी मेज से खिलाया (1 राजा. 4:22, 23)। दासत्व में, यहूदा के राजा यहोयाकीन को स्वीकृति दी गई कि वह "जीवन भर" बेबीलोन के राजा के सम्मुख भोजन कर सके (2 राजा. 25:29, 30)।

पाठ्य कहता है कि प्रतिदिन जो भोजन तैयार किया जाता था उसमें **एक बैल, छः अच्छी अच्छी भेड़ें या बकरियाँ** और **चिड़ियें थीं**। साथ ही, प्रत्येक **दस दस दिन के बाद भाँति भाँति का बहुत दाखमधु भी तैयार किया जाता था**। नहेम्याह की पहुनाई के बारे में ये विवरण संकेत देते हैं कि वह स्वतन्त्र रूप से धनी था। शायद वह एक धनवान परिवार से था अथवा "राजा का पियाऊ" (1:11) होने के कारण अपने व्यवसाय से उसने शायद इतना धन कमाया था।

आयत 19. नहेम्याह का परमेश्वर से इस प्रकार निवेदन करने के साथ यह बचाव समाप्त होता है कि **परमेश्वर** उसके **हित के लिये** उसे **स्मरण** रखे। जैसा वह चाहता था कि लोग जान लें कि वह लालच का अथवा दरिद्र लोगों का शोषण करने का दोषी नहीं था परन्तु उसका प्राथमिक ध्यान का केन्द्र यह था कि वह प्रभु को प्रसन्न कर सके। नहेम्याह ने परमेश्वर से कहा कि उसने जो कुछ **इस प्रजा के लिये किया है** उस पर वह ध्यान दे अर्थात जिन लोगों पर वह शासन कर रहा था उन पर उसे एक विश्वासयोग्य सेवक के रूप में देखे। उसकी निरन्तर प्रार्थना यह थी "हे मेरे परमेश्वर! मेरा स्मरण रख"; इसी समान निवेदन 13:22, 31 में रिकॉर्ड किया गया है (देखें 6:14; 13:14; 13:29)।

नहेम्याह अपने व्यवहार और कार्यों का बचाव क्यों कर रहा था? स्पष्टता के साथ, वह उन "रईसों" और "हाकिमों" के साथ स्वयं के चाल चलन में अन्तर बताना चाहता था जिन्हें उसने घुड़का था (5:7)। वे लोगों से धोखा करने और उनका

शोषण करने के दोषी थे जबकि वह उनके भले के लिए चिन्तित था। शायद वह बाद की पीढ़ियों को स्पष्ट कर देना चाहता था कि वह अन्य यहूदी अगुवों के समान गलत कामों का दोषी नहीं रहा। अन्य सम्भावना यह है कि यह अनुच्छेद उस सूचना का भाग था जो वह फ़ारस के राजा के लिए तैयार कर रहा था जो शायद यह जानने में रुचि रखता होगा कि उसके लिए "अधिपति के हक़ का भोज" कैसा रहा और यह कि अधिपति के रुप में नहेम्याह ने किस प्रकार बर्ताव किया।

अनुप्रयोग

प्रभावी अगुवाई: आन्तरिक समस्याएँ सुलझाना (अध्याय 5)

एक प्रभावी अगुवा आन्तरिक समस्याओं के साथ व्यवहार करने के द्वारा बाधाओं पर जय प्राप्त कर लेता है। विपत्तियाँ सदैव किसी संस्था के बाहर के शत्रुओं से ही उत्पन्न नहीं होती। अकसर, किसी अगुवे की योजनाओं के सम्मुख बड़ी बाधा आती है जिस पर जय पाने की आवश्यकता है जिसकी पहचान की जा सकती है वह, समूह के अन्तर्गत लोगों से आने वाला विरोध है। जब कोई नई परियोजना प्रस्तावित होती है तो सदैव नहीं कहने वाले लोग रहते हैं: "यह एक अच्छा विचार नहीं है"; "हमारे पास पर्याप्त धन नहीं है"; "हमारे पास पर्याप्त लोग नहीं है"; अथवा "हमारे पास उचित लोग नहीं है।" हो सकता है कि कुछ लोग ईमानदारी से मानते हों कि उस परियोजना पर काम नहीं किया जाना चाहिए या उस पर काम नहीं किया जा सकता; अन्य हो सकता है कि स्वार्थी उद्देश्य रखते हों। कुछ हो सकता है कि उस परियोजना को असफल होते हुए देखना चाहते हों जिससे वे स्वयं का प्रचार कर सकें।

जब एक अगुवा इस प्रकार के आन्तरिक विरोधों का सामना करता है तब वह क्या कर सकता है? इस प्रश्न के उत्तर के लिए नहेम्याह कुछ सुत्र उपलब्ध करवाता है।

पहला, पाठ्य सुझाता है कि एक प्रभावी अगुवा सबको अपने पक्ष में लेने के लिए अपनी ओर से सारे प्रयास करेगा। शहरपनाह के पुनः निर्माण के प्रस्ताव को लोग स्वीकार कर सकें इसके लिए नहेम्याह ने लोगों को राज़ी करना चाहा (2:17, 18)। उनमें से अधिकतर लोगों को राज़ी करने में वह सफ़ल रहा; और शहरपनाह का निर्माण किया जा सका, "क्योंकि लोगों का मन उस काम में नित लगा रहा" (4:6)। फिर भी एक प्रभावी अगुवा किसी परियोजना को आरम्भ करने में यह मानता है कि उस काम के सहयोग में लोगों को राज़ी किया जाना आवश्यक है। वह लोगों को शामिल करने के लिए योजना बनाता है और उस अभियान का वहन करता है और वह प्रभावशाली शत्रुओं में से मित्र बनाने के द्वारा विरोध से बचने का प्रयास करेगा (देखें रोमियों 12:18)।

दूसरा, नहेम्याह की कहानी बताती है कि किसी अगुवे के उत्तम प्रयासों के बाद भी हो सकता है कि आन्तरिक समस्याएँ खड़ी हो जाएँ। नहेम्याह को उन यहूदियों से व्यवहार करना था जो अपने भाइयों से दुर्व्यवहार कर रहे थे (5:1-

13), अन्य उनसे जो इस्राएल के शत्रुओं के मित्र थे (6:10-14), और कुछ उन लोगों से जो निर्ल्लज होकर परमेश्वर की व्यवस्था तोड़ रहे थे (13:1-31)। इन समूहों में से कोई एक समूह या सब समूह यहूदी जाति को अपने उद्देश्य को पूरा करने से रोक सकते थे।

अगर नहेम्याह आन्तरिक समस्याओं से बच नहीं सका तो वर्तमान के कलीसियाई अगुवे भी उनसे बचने की अपेक्षा नहीं कर सकते। यहाँ तक कि यीशु के समूह में उसके साथ यहूदा था। पौलुस की कुछ बड़ी समस्याएँ यहूदियों अथवा रोमियों से उत्पन्न नहीं हुई थीं परन्तु साथी मसीही लोगों से उत्पन्न हुई थीं। कुछ ने उसका विरोध किया और अन्य ने उसे छोड़ दिया। मसीही लोगों को उस समय घबराना नहीं चाहिए जब वे अपने भाइयों से विरोध का सामना करते हैं: विरोध का आवश्यक रूप से अर्थ असफलता नहीं है; वास्तव में हो सकता है कि यह इस बात का चिन्ह हो कि एक महत्वपूर्ण योजना सही दिशा की ओर जा रही है।

तीसरा, नहेम्याह की सफलता का विवरण सिखाता है कि एक अगुवे को उन बाधाओं से प्रभावी तरीके से व्यवहार करना चाहिए जो संस्था के अन्तर्गत उत्पन्न होती हैं। अगर अगुवा इस प्रकार की समस्याओं को उत्पन्न होने से रोक नहीं सकता तो उसे उनके साथ बुद्धिमता से व्यवहार करना चाहिए। नहेम्याह ने प्रत्येक समस्या से एक उचित तरीके के साथ व्यवहार किया।

अपने भाइयों से दुर्व्यवहार करने वाले लोगों का सामना करने में और उन्हें उपदेश देने में नहेम्याह ने स्वयं का प्रयोग उचित व्यवहार के एक उदाहरण के रूप में किया (5:14-19)। कभी कभी आन्तरिक समस्याओं में गलत कार्य करना शामिल होता है जिसमें प्रभावी शिक्षा और अच्छे उदाहरणों के द्वारा सुधार किया जा सकता है।

जो यहूदा के शत्रुओं के साथ मित्र थे उन लोगों के विषय में (6:10-14) नहेम्याह ने पहचान की कि उनकी सलाह परमेश्वर की ओर से नहीं थी परन्तु यहूदा के शत्रुओं की ओर से थी। उसके शत्रुओं के साथ उनकी मित्रता के विषय में उसे जानकारी थी और उनके शब्दों से प्रभावित होने के लिए उसने मना कर दिया। कभी कभी किसी विरोध के विषय में सम्पूर्ण में एक मसीही अगुवा जो कर सकता है वह यह है कि वह इस बात की पहचान करे कि सब लोग कलीसिया के लिए अपने मन में भला नहीं सोचते। कुछ लोग प्रभु के शत्रुओं के साथ अपनी मित्रता से प्रेरितों. होते हैं (उदाहरण के लिए संसार के साथ उनकी मित्रता)। उनके उद्देश्यों की जानकारी रखते हुए एक प्रभावित अगुवा इस बात की स्वीकृति नहीं देगा कि वह स्वयं अथवा जिनकी वह अगुवाई कर रहा है वे लोग उनके द्वारा प्रभावित किए जाएँ।

जिन लोगों ने खुले रूप से परमेश्वर की व्यवस्था को तोड़ा उनके लिए नहेम्याह जानता था कि उनके लिए अनुशासन आवश्यक है। राजा क्षयर्ष के साथ एक भेंट करने के बाद नहेम्याह यरूशलेम लौटा तो उसने पाया कि यहूदी अनेक प्रकार के पापों के दोषी हैं (13:4-31)। उसने निर्णायक रूप से कदम उठाया जिससे इस्राएल इन अपराधों को छोड़ दे। उसने अम्मोनी तोबिय्याह का सामान मन्दिर में बनी

कोठरी में से फेंक दिया। उसने लेवियों के जीविकोपार्जन के लिए दशमांश देने को पुनः स्थापित किया, सब्त को मानना लागू किया और यहूदियों और मूर्तिपूजकों के मध्य विवाहों को खण्डित किया। इसमें कुछ शक्तिशाली कदम शामिल थे! उसने उनको "डाँटा" और "कोसा," और "उनमें से कुछ को पिटवा दिया और उनके बाल नुचवाए," और "उनको परमेश्वर की यह शपथ खिलाई" कि वे अन्यजातियों के साथ अन्तर्विवाह की स्वीकृति नहीं दें (13:25)। परमेश्वर के चुने हुए लोगों के रूप में यहूदा के निरन्तर अस्तित्व को सुनिश्चित करने के लिए ये गम्भीर निर्णय लेने आवश्यक थे। जैसा नहेम्याह अधिपति था और व्यवस्था लागू करने के लिए उसके पास अधिकार था इसलिए उसने जो किया वह वैध रूप से उचित था।

कलीसिया के अगुवों को इस बात का अधिकार नहीं है कि वे निरंकुश सदस्यों को पीटें अथवा उनके बाल नुचवाए। एक मसीही अगुवे की प्राथमिक चिन्ता वह सब करने की होती है जिससे परमेश्वर प्रसन्न होता है। वह कभी भी इस प्रभाव के अन्तर्गत नहीं आए कि जब किसी ने उसके साथ बुरा किया हो तो बदले में वह भी बुरा करे। फिर भी कभी कभी सम्पूर्ण मण्डली की भलाई के लिए यह आवश्यक हो सकता है कि अपराधी सदस्यों के साथ व्यवहार करने के लिए कठोर कदम उठाने पड़ें। जब कलीसिया का कोई सदस्य परेशानी उत्पन्न कर रहा हो तो अन्तिम अनुशासनात्मक कदम जो उठाया जाना चाहिए वह यह है कि उसके साथ संगति करना छोड़ दिया जाए (देखें 1 कुरि. 5:1-13)। जब एक मसीही व्यक्ति प्रकट पाप के लिए पश्चात्ताप नहीं करता है जो कलीसिया को अनादर की ओर लेकर जाता है (जैसे कि खुले व्यभिचार में जीना) अथवा इसकी शुद्धता के लिए खतरा हो (सम्भावित रूप से झूठी शिक्षाएँ) तब ये ऐसे आधार हैं जिनके कारण उसे संगति से अलग किया जा सकता है। प्रत्येक अगुवे को यह पहचान करनी चाहिए कि सम्पूर्ण में किसी समूह के भले के लिए यह आवश्यक हो सकता है कि एक विश्वासघाती सदस्य को अलग करना पड़े। फिर भी, किसी को विश्वासयोग्य सेवा के लिए पुनः स्थापित करने के सब प्रयासों से मना करने वाले व्यक्ति के साथ व्यवहार करने में संगति से अलग करना अन्तिम तरीका होना चाहिए। इस प्रकार का कदम पवित्रशास्त्र के अनुसार उठाया जाना चाहिए; नहीं तो परिणाम के रूप में अच्छे के स्थान पर अधिक हानि उठानी पड़ सकती है।

निष्कर्ष। अगर आप एक अगुवे हैं तो आपको समूह में सबका विश्वासयोग्य समर्थन प्राप्त करने के लिए अपने अच्छे प्रयास करने चाहिए। आपके अच्छे प्रयासों के बाद भी कुछ लोग होंगे जो अब भी आपका विरोध करेंगे। जब ऐसा होता है तब जिनकी आप अगुवाई कर रहे हैं उन्हें निरन्तर सिखाने और समझाने के द्वारा आप आन्तरिक समस्याओं के साथ व्यवहार कर सकते हैं। जिस विरोध का आप सामना करते हैं उसके बारे में सचेत रहें और उसकी निगरानी रखें; तब बुद्धिमानी से उसके साथ व्यवहार करें। अगर आवश्यक हो तो समूह में जो नियमित रूप से परेशानी उत्पन्न कर रहे हैं उन्हें समूह से निष्कासित करने के शक्तिशाली कदम उठाएँ। अगर कलीसिया परमेश्वर की इच्छा पूरी करने में सफ़ल होना चाहती है तो कभी कभी एक प्रभावी अगुवे को निर्णायक रूप से कदम उठाना चाहिए जिससे आन्तरिक

समस्याओं का निवारण किया जा सके।

पश्चात्ताप की आवश्यकताएँ (5:10-13)

नया नियम पश्चात्ताप की माँग रखता है। इससे पहले कि मसीह के पीछे चलने वाला एक व्यक्ति मसीही बनें, उसके लिए आवश्यक है कि वह बीते पापों के लिए पश्चात्ताप करे (लूका 13:3, 5; प्रेरितों 2:38; 17:30)। तब मसीही बनने के बाद उसके लिए आवश्यक है कि वह उन पापों के लिए पश्चात्ताप करे जो पाप वह करता है (प्रेरितों 8:22)। पश्चात्ताप करने का अर्थ क्या है?

इस प्रश्न का उत्तर नया नियम यह सिखाने के द्वारा देता है कि धर्मी शोक अथवा पछतावे के परिणामस्वरूप पश्चात्ताप उत्पन्न होता है (2 कुरि. 7:10)। पश्चात्ताप की गतिविधि मन का परिवर्तन होना है (एक दृढ़ निश्चय करना) जो कामों में परिवर्तन (सुधार) की ओर अगुवाई देता है। सच्चे पश्चात्ताप में उन लोगों की क्षतिपूर्ति करना शामिल है जिनके विरुद्ध पाप किया गया।

नहेम्याह की पुस्तक बताती है कि पश्चात्ताप करने का अर्थ क्या है। अध्याय 5 यह नहीं बताता कि नहेम्याह के द्वारा जिन पापियों को घुड़का गया, उन्होंने अपने पापों के लिए क्षमा माँगी। उन्होंने नहेम्याह के दोषारोपण को स्वीकार किया जिससे हम कल्पना कर सकते हैं कि उन्हें "परमेश्वर-भक्ति का शोक" (2 कुरि. 7:10; NIV) महसूस हुआ। इससे अधिक महत्वपूर्ण यह सत्य है कि वे उसी प्रकार करने के लिए सहमत हो गए जैसा नहेम्याह ने आज्ञा दी - कि वे अपने अवैध चलन को रोक दें। पाठ्य आगे कहता चला जाता है कि वे उस दृढ़ निश्चय का वहन आगे तक करते चले गए (5:12, 13)। उन्होंने जिन लोगों से गलत तरीके से जो कुछ ले लिया था वह उन्हें लौटा दिया। अन्य शब्दों में, उन्होंने स्वीकार किया कि उन्होंने कुछ लोगों के विरुद्ध पाप किया था और इसके लिए उन्हें क्षतिपूर्ति दी।

पश्चात्ताप में चार चरण शामिल हैं: शोक, दृढ़ निश्चय, सुधार, और क्षतिपूर्ति। अगर हमने अन्य लोगों से पापमय तरीके से जो लिया है उसकी क्षतिपूर्ति हमारी उत्तम योग्यता में नहीं करते हैं तो, क्या हमने वास्तव में पश्चात्ताप किया है?

अपने विशेष अधिकारों को छोड़ देना (5:14, 18)

नहेम्याह ने बल दिया कि उसके पास "अधिपति के हक़ का भोजन" स्वीकार करने का अधिकार था फिर भी अधिपति के रूप में अपनी प्रथम समय अवधि के "बारह वर्ष" तक उसने ऐसा कुछ नहीं किया (5:14, 18)। क्यों? यहूदियों पर कर का बोझ पहले से बहुत "भारी" था; वह उस कर में और कुछ जोड़ना नहीं चाहता था अथवा अपनी जीविका के खर्चों का भुगतान करने के लिए उनसे माँग करने के द्वारा उनसे लाभ प्राप्त नहीं करना चाहता था।

अन्य ने भी इस प्रकार के आदर्श प्रस्तुत किए। प्रेरितों. पौलुस ने उन लोगों से भुगतान स्वीकार करने से मना कर दिया जिनके बीच वह प्रचार करता था - इसलिए नहीं कि उनके बीच प्रचार करने के लिए उनसे भुगतान प्राप्त करने का

उसके पास कोई अधिकार नहीं था परन्तु इसलिए कि उसका मानना था कि अगर वह उनका धन न ले तो वह उनके बीच और भी बहुत कुछ अच्छा कर सकता है (1 कुरि. 9:3-18)। मसीही होने के कारण हमें स्वयं से पूछना चाहिए, "किसी महान कार्य को पूरा करने के लिए क्या कुछ ऐसा मूल्यवान है जिसे स्वीकार करने के अधिकार को मुझे छोड़ देना चाहिए?"

हमारे मध्य आने और हमें बचाने के लिए यीशु ने स्वर्ग छोड़ दिया (फिलि. 2:5-9)। आरम्भिक मसीही लोगों को उपदेश दिया गया कि अगर उनके द्वारा माँस खाने से मसीह में उनके भाई और बहनों को ठोकर लगती है तो वे माँस खाना छोड़ दें (रोमियों 14:13-21)। अन्य स्थानों के लोगों को सुसमाचार उपलब्ध करवाने के लिए मिशनरियों ने अपने घर और देश छोड़ दिए। परमेश्वर के लोगों के लिए हमें किस प्रकार के विशेष अधिकार छोड़ देने चाहिए?

दृढ़ विश्वास और विरोध (5:15)

5:15 में नहेम्याह ने कहा कि उसने यहूदियों के अधिपति के रूप में उन पर भारी बोझ नहीं डाला। उससे पहले के अधिकारियों के अन्तर में, लोगों को हानि पहुँचाते हुए उसने अपने पद से लाभ नहीं लिया। उसके उदाहरण हमें चुनौती देते हैं कि हम अपने दिन के बुरे चलन को स्वीकार नहीं करें। जो सही है उसके अनुसार करने के लिए हम दृढ़ विश्वास रखें और संसार के चलन के अनुसार नहीं चलें। पौलुस ने लिखा, "इस संसार के सदृश न बनो; परन्तु तुम्हारे मन के नए हो जाने से तुम्हारा चाल-चलन भी बदलता जाए, जिससे तुम परमेश्वर की भली, और भावती, और सिद्ध इच्छा अनुभव से मालूम करते रहो" (रोमियों 12:2)।

अपनी शक्ति का गलत प्रयोग नहीं करने के लिए नहेम्याह की प्रेरणा उसमें "परमेश्वर का भय" होने के कारण थी। यही प्रेरणा मसीही युग में वैध है (प्रेरितों 9:31; 10:35; फिलि. 2:12; इब्रा. 12:28; 1 पतरस 2:17)। साथ ही, हम उस महान प्रेम से प्रेरणा पाते हैं जो परमेश्वर ने अपने पुत्र यीशु मसीह के बलिदान के द्वारा हम पर प्रकट किया। पौलुस के मिशनरी प्रयत्न - जिनका चरित्र चित्रण दृढ़ निश्चय और विरोध के द्वारा किया गया - इन वेगों के द्वारा चालित थे। उसने कुरिन्थियों को लिखा, "इसलिये प्रभु का भय मानकर हम लोगों को समझाते हैं ...। क्योंकि मसीह का प्रेम हमें विवश कर देता है; इसलिये कि हम यह समझते हैं कि जब एक सब के लिये मरा ..." (2 कुरि. 5:11, 14; NIV)।

समाप्ति नोट्स

[1]देंखें एस्तेर 7:8, जहाँ राजा ने हामान पर दोष लगाया कि वह रानी से "बरबस" अथवा "छेड़छाड़" (NIV) करना चाहता है। [2]अन्य मामला जिसमें बच्चे दास बना दिए गए क्योंकि उनके माता पिता ऋण चुकाने में असफ़ल रहें, देंखें 2 राजा 4:1. [3]ये साहूकार सम्भावित रुप से उनके साथ "कठोरता से" व्यवहार करते होंगे और "छह वर्षों" के बाद उन्हें छोड़ देने का कोई झुकाव प्रकट नहीं करते होंगे। (वे जो अन्यजातियों के हाथ बेचे जाते थे वे स्पष्टता के साथ छह वर्षों के बाद भी छोड़े नहीं जाते थे।) [4]डेरेक किड्नर, *एज्रा एन्ड नहेम्याह*, द टिन्डेल ओल्ड टेस्टामेन्ट कमेन्ट्रीज़ (डाउनर्स

ग्रोव, इलिनोय: इन्टर-वर्सिटी प्रेस, 1979), 96. [5]एड्विन एम. यमौची, "एज्रा-नहेम्याह," इन *द एक्सपोज़िटर्स बाइबल कमेन्ट्री*, वोल. 4, *1 राजा-अय्यूब*, एडिटर फ्रेंक ई. गेबलाइन (ग्रान्ड रेपिड्स, मिशिगन: जोनडर्वन पब्लिशिंग हाउस, 1988), 708. [6]लेस्ली सी. एल्लन एन्ड तिमोथी एस. लानियाक, *एज्रा, नहेम्याह, एस्तेर*, न्यु इन्टरनेशनल बिब्लिकल कमेन्ट्री (पीबॉडी, मैसाचुसेट्स: हेन्ड्रिकसन पब्लिशर्स, 2003), 113. [7]*अमेरिकन हेरिटेज डिक्शनरी*, 5वां एड. (2012), एस.वी. "अशरी।" [8]जेम्स बर्टन कॉफ़्फ़मेन एन्ड थेल्मा बी. कॉफ़्फ़मेन, *कमेन्ट्री ओन एज्रा, नहेम्याह एन्ड एस्तेर* (अबिलीन, टेक्सास: ACU प्रेस, 1993), 156-57. [9]कीथ एन. स्कोविल, *एज्रा- नहेम्याह*, द कॉलेज प्रेस NIV कमेन्ट्री (जोप्लिन, मिसौरी: कॉलेज प्रेस पब्लिशिंग कं., 2001), 185. [10]देखें लुडविग कोहलर एन्ड वॉल्टर बॉमगार्टनर, *द हीब्रू एन्ड अरामिआक लेक्सिकन ऑफ़ द ओल्ड टेस्टामेन्ट*, स्टडी एडिशन, ट्रांसलेटर एन्ड एडिटर एम. ई. जे. रिचर्डसन (बोस्टन: ब्रिल, 2001), 1:344.

[11]यह पद सिद्ध नहीं करता कि अध्याय के प्रथम भाग में बताई गई आर्थिक समस्याएँ नहेम्याह के अधिपति के रुप में होने के बारह वर्षों के बाद उत्पन्न हुईं, जैसा कुछ लोग सोचते हैं. [12]यह कथन 5:19 में नहेम्याह के निवेदन को निकाल देता है. [13]यमौची, 710-11.